Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on **-- विजयनगर साम्राज्य का कला एवं साहित्य।** *(for TDC Part 2 HISTORY HONOURS)*

विजयनगर साम्राज्य का कला एवं साहित्य ।

स्थापत्य कला :

विजयनगर साम्राज्य स्वयं वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना है इसका राजमहल अत्यन्त भव्य एवं सुंदर था। अब्दुल रज्जाक ने नगर की सुंदरता का विस्तृत वर्णन किया है।

विजयनगर में मंदिर स्थापत्यकला का पर्याप्त विकास हुआ। पिछले काल से चली आ रही मंदिर स्थापत्य की संरचना की निरंतरता एवं कुछ नवीन संरचनाओं का विकास इस काल में हुआ। मंदिर स्थापत्य में बेसर शैली का कुछ प्रभाव दिखता है। मंदिर स्थापत्य कला की मुख्य धारा हिन्दू धर्म के साथ जुड़ी हुई थी। इस काल में 'विजयनगर शैली' के रूप में नयी शैली का विकास हुआ। इस शैली का परिपक्व विकास कृष्णदेवराय के समय निर्मित हजारा एवं हम्मी का विठ्ठल मंदिर एवं विरूपाक्ष मंदिर में देखा जा सकता है।ये मंदिर स्थापत्य कला के उत्कृष्ट नमूने हैं। मंदिर में हजार स्तम्भों वाले मंडपों का अस्तित्व मिलता है। मंदिर में मंडप के अतिरिक्त एक 'कल्याणमंडप' का निर्माण हुआ। यह मंदिर के आंगन के बाई ओर बनाया जाता था इसके निर्माण में अलंकृत

स्तम्भों का अत्यधिक प्रयोग हुआ है। इस कल्याण मंडप में देवता का विवाह समारोह मनाया जाता था। विजय नगर कालीन मंदिर स्थापत्य द्रविड़ शैली का प्रतिनिधित्व करती है। ढांचे को मजबूती देने के लिये पत्थरों का प्रयोग किया गया। इसमें मंदिरों की भव्यता और व्यापक अलंकरण पर विशेष बल दिया गया है।सुंदर एवं अलंकृत स्तम्भों का प्रयोग किया गया है। इन स्तंभों पर अलौकिक पशु की मूर्ति बनी है जो घोड़े या हिप्पोंग्राफ से मिलती जुलती है। मंदिरों में देवी-देवता के अतिरिक्त राजा एवं रानियों की मूर्तियां भी बनती थी जो शासक के दैवी स्वरुप की ओर संकेत करती हैं।

मंदिर के साथ देवता की पत्नी के लिये अम्मान मंदिर का भी निर्माण किया जाता था। गोपुरम' के विशालकाय निर्माण पर बल दिया गया जो 'रायगोपुरम' के नाम से जाना जाता है।विजय नगर के कुछ इमारतों में धर्मनिरपेक्ष तत्व भी मिलते हैं जिसमें हिन्दू एवं मुस्लिम दोनों के स्थापत्य का प्रभाव है जैसे 'रानी का स्नानागार', 'शाही सभा कक्ष', 'कमल महल' आदि।

शिल्पकला :

शिल्प कला मुख्यतः मंदिर स्थापत्य से संबंधित रही। स्तंभों के अलंकरण उनके शीर्ष पर उकेरी गई पशुओं की मूर्तियों तथा मंदिर में स्थित देवी-देवता तथा राजा-रानी की मूर्तियां शिल्प कला का नमूना है।

संगीत कला :

संगीत कला का पर्याप्त विकास हुआ। संगीत पर रामामात्य द्वारा 'स्वरमेल कलानिधि' नामक ग्रंथ लिखा गया। समाज में गणिकाओं की उपस्थिति थी तथा नृत्य संगीत का भी प्रभाव।

साहित्य :

विजयनगर साम्राज्य में संस्कृत, तेलुगू, तमिल एवं कन्नड़ भाषा एवं साहित्य का विकास हुआ। भाषा-साहित्य के विकास की दृष्टि से कृष्णदेवराय का शासन महत्वपूर्ण माना जाता है। उन्होंने स्वयं तेलुगू भाषा में 'आमुक्तमाल्यदा' एवं संस्कृत में 'जाम्वतीकल्याणम्' नामक प्रसिद्ध ग्रंथ की रचना की। कृष्णदेव राय को तेलुगु साहित्य के विकास के लिए 'आंध्रभोज', 'अभिनव भोज' कहा जाता है। कृष्णदेवराय का शासन काल तेलुगू

साहित्य के विकास का स्वर्ण युग माना जाता है। उनके दरबार में तेलुगू भाषा के 8 महान विद्वान रहते थे जिन्हें अष्टदिग्गज के नाम से जाना जाता है। इन अष्ट दिग्गजों में तेनाली रामकृष्ण, अलसानी पेद्दन, सायण आदि प्रमुख थे। पेद्दन ने मनुचरित ग्रंथ की रचना की। सायण ने चारों वेदों पर टीकाएं लिखीं। तमिल भाषा में धार्मिक कृतियां शैव, वैष्णव और जैन विद्वानों द्वारा प्रस्तुत की गई। मेयकन्दर ने 'शिवनामबोदम' की रचना तमिल में की। अरुनंदी ने 'शिवनामा सितियार' नामक तमिल भाषा में शैव धर्म से संबंधित ग्रंथ लिखा। धर्मनिरपेक्ष साहित्य में बिल्लीपुत्तुरार द्वारा रचित 'भारतम्' नामक तमिल ग्रंथ महत्वपूर्ण है।

इसी काल में मलयालम साहित्य का भी विकास हुआ। अज्ञात लेखक की कविता 'उन्नुनीली संदेसम्' मलयालम की मानक साहित्यिक कृति है जो कालिदास के 'मेघदूत' पर आधारित है। माधव पन्निकर ने 'भागवत् गीता' का संस्कृत से मलयालम में अनुवाद किया।

कन्नड़ भाषा का भी विकास हुआ कन्नड़ विद्वान 'मधुरा ने 'धर्मनाथ पुराण' की रचना की जो 15वें जैन तीर्थकर पर टीका थी। भट्टकलंकादेव की 'कर्नाटकशब्दानुशासन'

कन्नड़ व्याकरण का प्रमुख ग्रंथ था।

स्पष्ट है कि भारतीय संस्कृति में कला और साहित्य के विकास में विजयनगर साम्राज्य का अभूतपूर्व योगदान है।

References: Internet & Competitive books.